# ✺ 18 मई 2014 (2-1-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

## ✺ ज्ञान-

1] माँ का स्नेह बच्चों से ज्यादा होता है या बच्चों का माँ से ज्यादा होता है? बच्चे खेल में बिज़ी होते हैं तो माँ को भूल जाते हैं। माता की ममता बच्चों को याद दिलाती है। ऐसे भी अगर स्नेह नहीं होता तो बच्चों को प्राप्ति भी नहीं होती।

2] ब्राह्मणों की संख्या कितनी बताते हो? क्या 50 हजार से 16108 नहीं निकलेंगे? मणके तैयार हैं लेकिन नम्बरवार पिरोने के लिए लास्ट सेकेण्ड भी अभी रहा हुआ है। मणके फिक्स हो गये हैं, जगह फिक्स नहीं हुई है। जगह में लास्ट से फास्ट हो सकते हैं। आज ब्रह्मा ने 16108 मणकों अर्थात् सभी सहयोगी आत्माओं के तकदीर की लकीर फाइनल कर दी। इस कारण भाग्य विधाता, भाग्य बाँटने वाला ब्रह्मा को ही कहते हैं और यादगार रूप में भी जन्मपत्री, जन्मदिवस पर या नाम संस्कार पर ब्राह्मण ही जन्म-पत्री बनाते हैं। तो ब्रह्मा माँ ने 16108 मणकों की निश्चित तकदीर सुनाई। आप सब तो उसमें हो ना!

3] आज विशेष ब्रह्मा द्वारा विदेशी या देशी दोनों तरफ के बच्चों की महिमा के गुणगान हो रहे थे। जैसे आदि में आये हुए बच्चों के भाग्य की महिमा है, वैसे ही अव्यक्त रूप में पालना लेने वाले नये बच्चों की भी इतनी महिमा है। जैसे आदि में कोई प्रैक्टिकल जीवन का प्रभाव नहीं था सिर्फ एक बाप का स्नेह ही प्रमाण था। भविष्य क्या होना है– यह कुछ स्पष्ट नहीं था, गुप्त था। लेकिन आत्मायें शमा पर पूरे पतंग थी। ऐसे ही नये बच्चों के आगे अनेक जीवन के प्रमाण है। आदि मध्य अन्त स्पष्ट हैं। 84 जन्मों की जन्म-पत्री स्पष्ट है। पुरूषार्थ और प्रारब्ध दोनों ही स्पष्ट हैं लेकिन बाप अव्यक्त हैं। बाप की पालना अव्यक्त रूप में होत हुए भी व्यक्त रूप का अनुभव कराती है। अव्यक्त को व्यक्त अनुभव करना, समीप और साथ का अनुभव करना– यह कमाल नये बच्चों की है।

## ✺ योग-

1] सुनाया था ना कि याद की यात्रा का, हर प्राप्ति का और भी अन्तुर्मख हो, अति सूक्ष्म और गुह्य ते गुह्य अनुभव करो, सिसर्च करो, संकल्प धारण करो और फिर उसका परिणाम देखो, सिद्धि देखो– जो संकल्प किया वह सिद्ध हुआ या नहीं? जो शक्ति धारण की उस शक्ति की प्रैक्टिकल रिजल्ट कितने परसेन्ट रही? अभी अनुभवों के गुह्यता की प्रयोगशाला में रहना। ऐसे महसूस हो जैसे सब कोई विशेष लगन में मगन इस संसार से उपराम हैं।

2] अभी वर्णन सब करते अर्थात् याद, योग अर्थात् कनेक्शन। लेकिन कनेक्शन का प्रैक्टिकल रूप, प्रमाण क्या है, प्राप्ति क्या है, उसकी महीनता में जाओ। मोटे रूप में नहीं, लेकिन रूहानियत की गुह्यता में जाओ तब फरिश्ता रूप प्रत्यक्ष होगा। प्रत्यक्षता का साधन ही है स्वयं में पहले सर्व अनुभव प्रत्यक्ष हो।

## ✺ धारणा-

1] वरदानों का लाभ लो तो हर मुश्किल बात सहज अनुभव करेंगे। देखने में अति मुश्किल होगी लेकिन अति सहज रीति से हल हो जायेगा। इसको कहा जाता है पहाड़ भी रूई समान बन जाता है। राई फिर भी सख्त होती है, रूई नर्म और हल्की होती है।

2] कोई कर्म करना है तो कर्मेन्द्रियों का आधार लो लेकिन आधार लेने वाली मैं आत्मा हूँ, यह नहीं भूले, करने वाली नहीं हूँ, कराने वाली हूँ। जैसे दूसरों से काम कराते हो तो उस समय अपने को अलग समझतो हो, वैसे साक्षी हो कर्मेन्द्रियों से कर्म कराओ, तो कर्तापन के भान से मुक्त अशरीरी बन जायेंगे। कर्म के बीच-बीच में एक दो मिनट भी अशरीरी होने का अभ्यास करो तो लास्ट समय में बहुत मदद मिलेगी।

## ✺ सेवा-

1] फर्स्ट क्लास सेवाधारी की विशेषता यही दिखाई देगी, जो सेवा करते भी सेवा द्वारा बाप के गुणों और कर्तव्य को प्रसिद्ध करे– सिर्फ कर्मणा सर्विस नहीं। चाहे स्थूल कर रहे हो, लेकिन हर कर्म द्वारा, हर कदम द्वारा बाप के गुण और कर्तव्य को प्रसिद्ध करे। यह है फर्स्ट क्लास सेवा।

2] विश्व राजन बनना है तो विश्व को सकाश देने वाले बनो।